10 July_Anantnag 7676.pdf **Title : Jyotisha Ratnamala (by Sripati)**

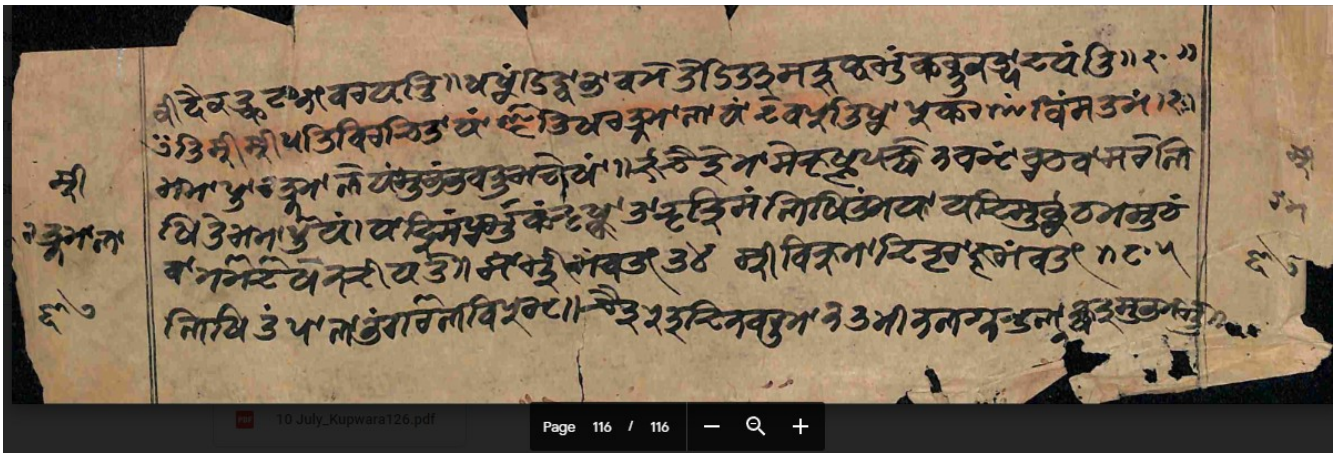

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

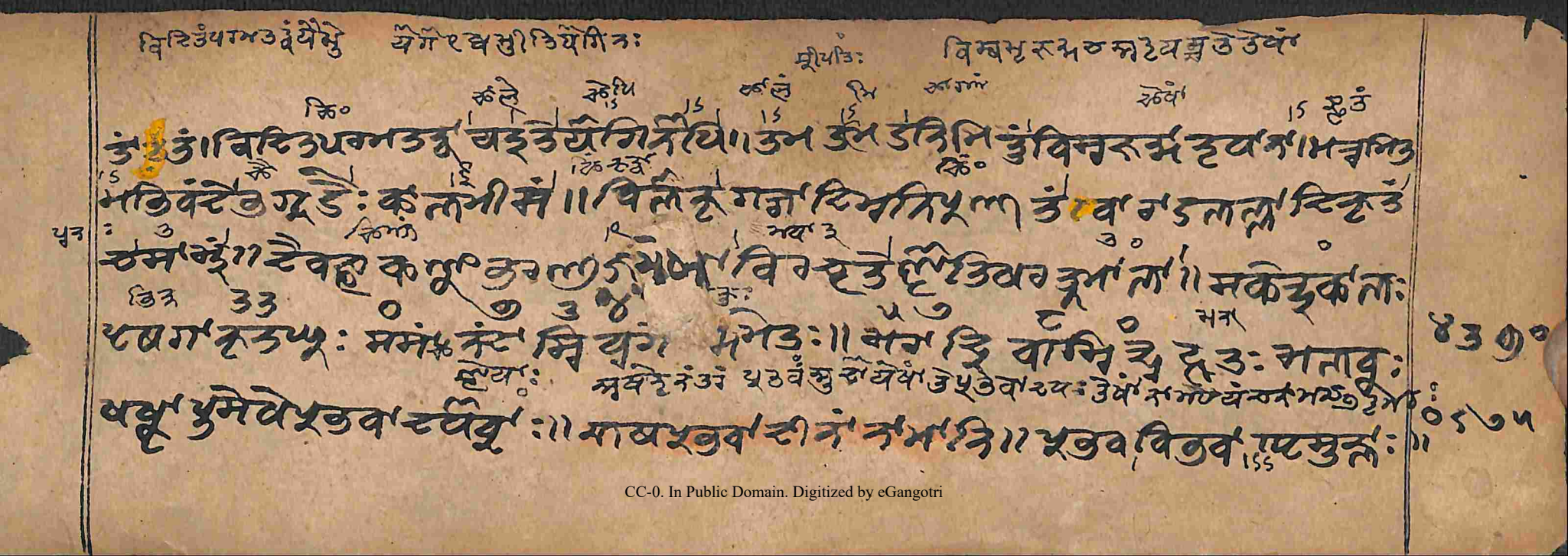

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

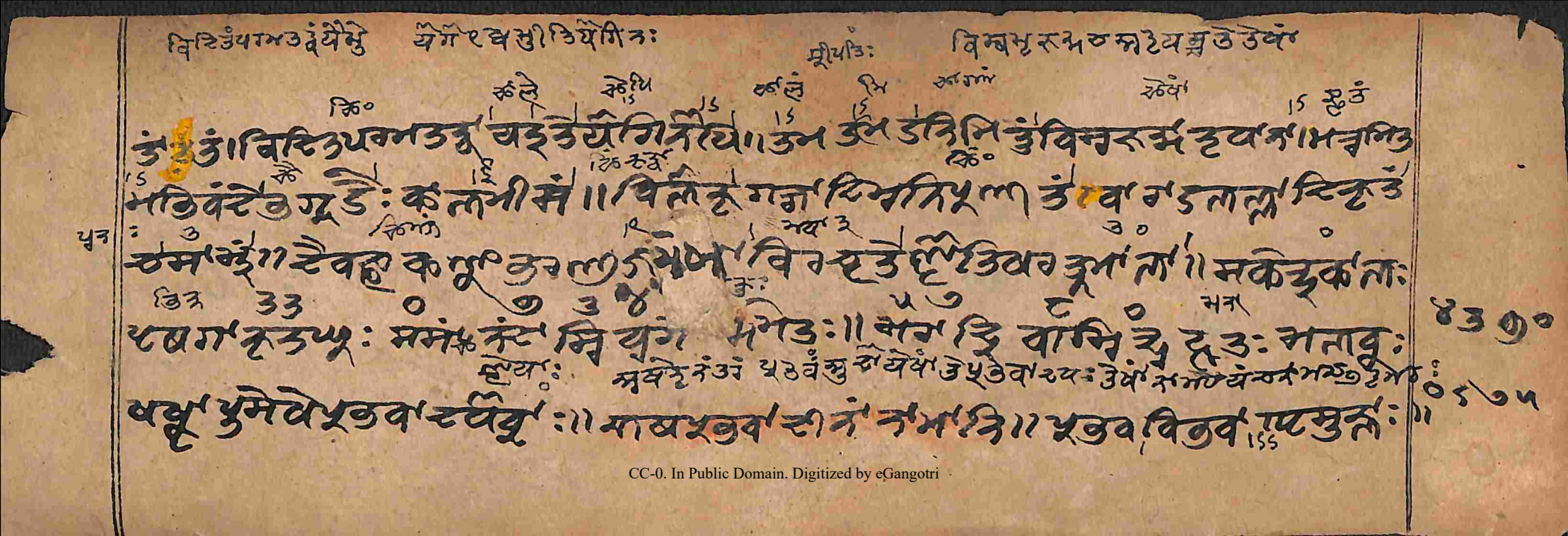

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [

श्री
रघु
३३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] ॥ १ ॥ माधवी वन ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

विष्णुर्गोचरे ॥ उन्मत्त कन्यकुलधिर्लि नरं ॥ ओं ॥ ॐ भट्टाय कीर्तितां ॥ कि उ ॥ वैवस्वे
भूर्वयवं शिवमिति ॥ धिउः पन्नगेश्वरकृतः ॥ नियतीय ॐ ॐ देवेशि नं ॥ भूमिदुः
भस्मभयं भूकं मि उः ॥ रविरथ वये चिद्रुमं हेमरेखा ॥ कुलकुलो विट मन्त्रं गुरुभ्य
नमः यास्कं ॥ गटडाकिउः ॥ भव विषु विषकुलं मुक्तेवुठं वृषवलि उवे विषम
गटडेवयेन्दुः सुउः पन्नगेश्वरो ॥ मामकुलाभ्यं भाव नीक्षि उयः ॥ मुकुटः मुंथ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुखेक्षि उमु ॐ विष्णु लौ हूं साथि फिरुरेहुं ॥ यः सहस्रमेने विलोकि उमु ॥ मनी रुमेमु
गेथि वीर्यिरेउ ब्रिउ उगटउ ॥ दृष्ट रुतांपरकी ब्रिउ ॥ मामसुमेवमु विति ॥ माकंता
रुदं भगयं रुमाउं ॥ वाहु मा जंमं ल्व लिंवठ ॥ गटउ ऐरेयं गामं विवल्लये
हुं उ ऐ विहु ब्रियमब्रिउ ऐ ब्रिउ ॥ रुं हुं ब्रुवे विहु मंत्रे भत्रे ॥ ॐ हुं मुरे हुं मुरे हु
ल्मट ॥ मुं मुरे लौ उ मक्कु हुल्मट ॥ रुं रुवर्तुः की ब्रिउः मेथे यें मु ॥ मलि हूं उ मलि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सरुउमभ तं॥ भक्तु दत्तं मीउगे: भाडे वभ्रत्थ विभं भव कुं। मीभ्रस्ता वत्तु उंदेवे ह
भ्रत्थ पुष्पर गभ्भ भ्र व दव्व दुंमने:॥ नीतं विद्र लाभ हयेसु भाडिउ॥ मीभेट वेवू
दके॥ भावं भ्रद्दं॥ भउ: मित्तो। ता भव्व वत्तु कुमेवभीभ्रयधी भ्रवुपद्म काविउ:
भउ भ्रपुष्पे विवभ्रिंडु गर्वे॥ मुत्त वडंभ्रं भ्रभ्रं हुउंवुत्तु:॥ भ्र॥ पंडगवगदत्त उवि
भिमे:॥ मांपमुत्ति कुभ्र दव्व दिकेमु॥ मीउ वभ्रिमकु उ वेकु उंहा भ्रं मभे उ उ भ्रिउंकु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पडं॥ ॐ॥ चिन्तुरुहनवता वम्म प्रुष्टे हुं गुलीक अनिदी वकुलेमु। भं नमस्तुविं ओं मि
सुड हिंडु भट्टेय विजिव वम्म हः॥ ॐ॥ गिमय वृ उ उ लैः सम्बरैः॥ कैरे मुकिं व स
वसुलाडमिः भं नम कुमिद मइ कुरुं॥ वेन मुख विन मसंवुतैः॥ वृ॥ भं ताड कुम
म मुइ मवेयः॥ य ल्ले वै मुमयांडु कैरे वैः मिम संवुमपक नम्पटं वैरुं मुर
रुं विकुंडु॥ रु॥ ए ताव व मिताय मम विडैः॥ वाविलिः मक ताड ताडं कुमैः॥

यत्रैवधिक्षोग्रकरणं रवौ दोस्तत्रैवषण्मासमुपांतिराहुः॥
ऋतुमुखस्मिन्मुरयं प्रयातिशुभेषुकार्येषु न तद्विधेयं॥

श्री
रघुनाथ
३६

मं नउंकृतुमुखउंपथ्यं दिउं॥उः पमोंउ वितायंनवं मय॥मासि उ उितं कृतौ पूर्वता
ज्ञः मडपूर्व्वपथ नता रयु उं ज्ञिः॥रवि उ नयेकवि उं विथमन्ते नां नमेउ उ उं
हृपउीकं॥ज्ञं पूरनु उितपरु कवमु डस्तिउ रमगन उि पर्यो ज्ञिः मं नमा क्रिम
पमेठउन उं: मासु उ उमि थं रमेवरु कें उः॥ मन्दैय ठेदं उिगस्त विरं मंय
वंयवंसुभुनयं उिमन्दै: उर्यंदि उः मं नविठं नउं थि गडमुउं नमभयेहवन्दं॥

श्री
रघु
३६

श्री राम
३६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

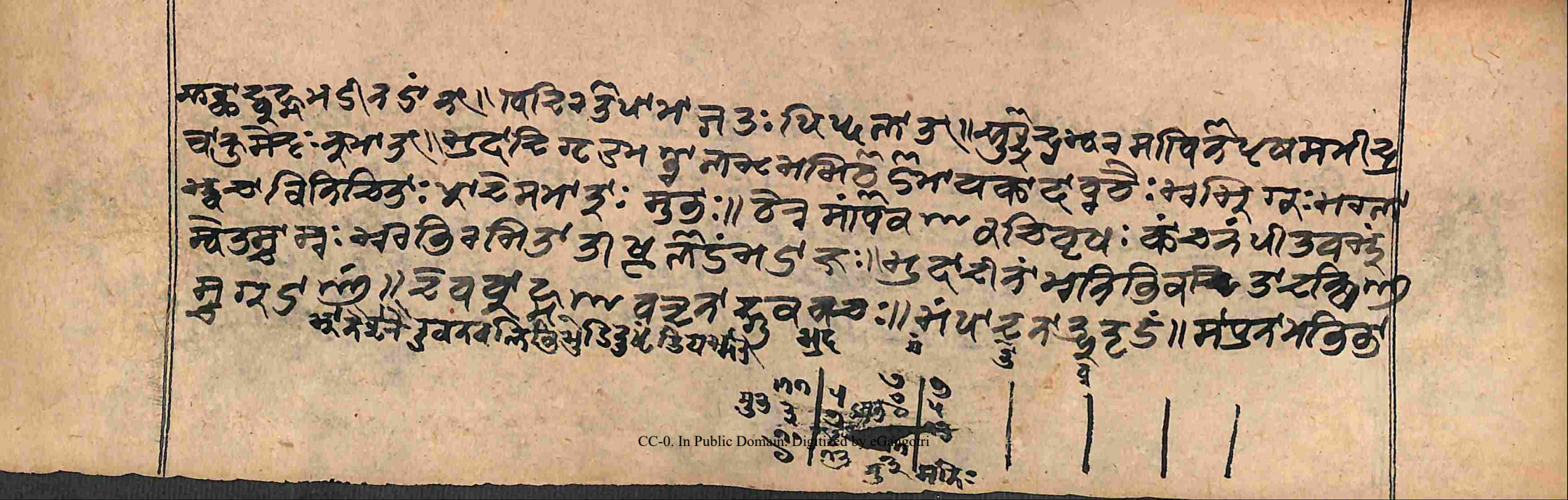

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ अथः कथि उर्गिड उ ग द्वादश दैः भूत ॐ ॥ साति विकता मरा व भूत मिपूथि
उ ॥ भूतवडि पत्तुकवु। भचक द लिथेथि उ ॥ मुक्तेथ ह्मे मीउ ग मिव
ना इ भूर ग हंउ ग्क ह्मे भूरिथु मकु युकु विद्म ग्रेथिथ हे। मम उंहूथे
थि उं ह्मथिहथुं ॥ ग मैं ग मैं ह्मर मैं हुं वं इन्द्रः ईकु : के मि हु मिति : ई
थि उं हः ॥ व इ रम्मे ह्मडक तोथ मिथुं मं ह उ न्टं उ ह्मतो थि उ नाथं ॥ भूव मन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रघुनाथेदिकंकण॥ विजुधाल्लदिकंकण। कडुवंमिबुकेरिय॥ मि॥ वाथीकुपउ
कुकाचिवाविंठनमिकाले। धोधिकंकण यडुमुनचांमिबुडिकंकुलि॥ क॥
वलिकुवादियाकंकण। रुपमेवन॥ परयेगमुमेवेकुंयमुकमुवेडिउं
मिं॥ कुवठं मिलिविछनंकुधाल्लदिरमंडिउं। कडुवः धोधिकः रमुः
कन्टलगेडुमिकुवे॥ कं॥ रुधिकंकणवालकेवः वाइकंकडुलोरिय॥ धमि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इति डाकमचालि ॥ उना ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ मा डमंडल २ लि गुरु २ स्वभेव त्रिवेरनं ॥ ॐ
कमभिन २ मुं कुरु २ हमि कैरचे ॥ ॥ पूरुं नथे पि केहु डमंमं डम यागरुं ॥ रथ
नारे विरुया भुद २ स्वकमभिनुये ॥ ॥ फेरं मे स्वभुया इति वनुमेरेव गिलिः
दमीरुं रुचे पूरि कुरुं मंकेस्टये ॥ ॥ ॥ ॐ देरकयं ॥ एवकमरुंरुया
वीरेमंडलि भुरुकुरुं कुनमेरचे ॥ ॥ विह नंरुमिन्द्रि रुचे पुयमुकमरुं ॥ वेरुं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री
रामनाथ
४०

उ

पडयन्त प्रथ्य॥ इत्यकम्भ उवस्त्रिवस्त्रिय॥ गारयेच्छमुक्त चिद्रुमे॥ उ जेविवियलि विद्रुमंवुउ॥
मुद्रेयवर्मुमुक्तैवनेथ्य॥ वमेन्वजेद्रविन्नः प्रयेगः॥ वृठेवितामेट मनेवर्तुमे॥ ॐ दम्प
कानः कविउमेनाद्रुः॥ मुठेवितामेट मनयगेय॥ २वैकुरुवेष व [illegible]॥ विद्रुपुण
द्रु मरउन कदः॥ [illegible] मुय: [illegible] निमेवकेउ॥ मुवुगटडेट वे मुद्रुनैठनेम्बद्रुयेनिय॥
२वैवद्रुक्रियः मम्मुः यमुनंमनिखिः मद्रुउ॥ वादउ[illegible]मुनेनृगुपद्रु॥ द्रुचतोपुरुपरयुमुद्रुउ॥

नमयुकुमार
श्री
रम
४०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यं प्रभुडिकथिउ थिरकंत ॥ कमयोडु यउ भंउ उ ॥ लागउ भ्रभउर मिभमिउ ॥ वंकुउ
दवरु मरगुमंव ॥ पुइकम उदयेव मिडेव । पुयनीभमरिउ भमयेव उ ॥ माषगटडपु
वेमतागुमंड ॥ मडुडेंडुवकतागमो चलो मेल्लिउ: पुमरमेलकगडे: ॥ मजुमिगडविवकुडे
भिउ ॥ गरभटेनव गंडपवेमनं ॥ डिक्कं कुरे लग्ग ॥ ठमं मंडे वोइनं । मंगनृमभिगंड
मु ॥ पमुमदिवृगुदये ॥ पुहुरुडे वेम गंकुभ्वर्मडु ॥ डीवे लागेव कुउंव भग्य ॥ मीमडुपुष्पलि

कमुखि कटक्षे ॥ ॥ ॥

यैक्रो ग्रिउ मिन्य॥ विद्दं रंजः प्रमन्दउ॥ मायं छ्रं नं॥ मीउं मे पुठ मं मिन्ने। मुउ पुट्यव सि
प्र॥ छ्रं नम्ट गरड मं क दं डिद्व थं प्रगरडेस्यं॥ मायन ट्ट रंजः॥ पुर्वे चिनाग्रे मं मिउ॥ छ्रं
मं मे मुउ पुं ग्रिउ डिद्व कन्ने मुउ ग्रं ट्ट। प्रं रंजः मद्धि ग्रिय उ॥ मायथं ट्टनाग्रे॥ ट्ट मनै
क ट्ट मेनाग्रे॥ विद्व केन्द्र ड्रिक मन्ने:। मुखैः पर्मर्क ग्रेकुं॥ वल्लयिद्व थटेस्यं॥
मायरना रंजः॥ नाग्रे ड्रीवे छ्रेयव उ चतै॥ ग्रुवैः मुक्रे मथिमेथुं मन्ने॥ मुर्टेस्ट्रे
मन्न उ या मन्न कं॥ प्रं रंजः मद्धः चिद्व यि ड्रि चिकन्दमं॥ मायथं थ्यं॥ कुं नमन्न ड्रि ठ नरुय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुनु ॥ भइउ ठिउ वलवउ ॥ मुनु थमुनि उक्त मिलि वेगे ॥ कीनिउ ठिय उमे थवने
वा ॥ माथवंठिकर ॥ ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मरुनिउकिरुईगेवयवरिउवट॥ ॥ वेहुउमहउविठिमहउकडुईं:॥ लागेडीवे
उ जेरहिकेल॥ मुरुं मन्डेवटहिठे वेटवेउ॥ मेरं मन्डे: प्रवि तागेवमुरु: विह
मी तापे हिउ: मटउ उप्पु:॥ वा उप्पु मेरउमहुं वव गडियउ: ॥ केरुमंडुवव हे॥
विह मेरा पंड युकुं हुमनमिमिडे हे थकमुपरिडु:॥ मुदेव हे धम्मे वीउवठिठ
गलिडे॥ मन्डहउमुरुउ॥ मीउं मे वेमहउहिउमकरउउये मेवक मुं मुरुकरा॥
मटं मे हुरयरिउमुवेउ मुउ जे॥ हं कुरुं हुवडिउ उपठी: मुरुं मे। वरुं मे वुडिउडि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]॥ [illegible] चिडीने। [illegible] ॥ उदयेमवुठ [illegible]
वेटे॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मीउमीयं यस्यु॥ यमभरमभ्यैति। कुंपति: मकुडेपु। वृषभउत्रिपुवल्ल॥ मकुतंटकुविपु
मकतानुवनमंडु। सेष्य विपु मुकुंड:॥ यस्ट्रिवेके मनवमंमइ॥ उवेद्धितामेयस्त्रि
इकैल्ल॥ मुक्रेन्बुरे मरुगटडर:॥ मभेरउवंयिश्रिव नाथ्यु॥ इतानुमंर्कुं मकिडिग्य
र मी॥ मेपुवल्ल वंपुगटडुगुवमु॥ यस्ट इयेगेकुयेडेविवेक:॥ मंयकुंमंउस्टिवि
मंवुव: मटउ॥ ॥ ॐ श्रीमीयतिवरिउं यं एंडियवकुमा तायं मंस्त्रिवेक
पुकमंकडुमं॥ ॥ मावयइंपुकमंमंमवृउ॥ यइंत्रिमं वंकवयमंमुउ: म

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मचैमयेउम्रसु ल्लिलिगीयें:॥ माउकिउे ल्यम्रिकयट यंके॥ कता खिरकु खुम वलकुंहे॥
माहुउस्रकेपहैदंचे ल्यम्रिउिम्हुं॥ ख्रेरठ खिखिहे॥ चहुउमारमकुतं॥ रम
गमिरउस्रमंवितागं॥ उउ उीउस्यगो यहिवमुं:॥ हूंयकंहु मियुंहे खिउउंहे॥ मउ
वंखय मयेउिउस्र कीम॥ कमेउिउ मैनजमनंह तंख॥ रुरे वितागमुकुस्रहु खिपुकु॥
खिमेस्यमेस्रकुम कंवयउु:॥ मुकंमुकेशखिपुउे खिहिंवमं॥ खिस्रहु मंपुस्यंपुपहे॥
हूंगरहे: यकु मिकीकउेरु पुव खियहुस्यपुरु मुस्रमें॥ खिवहु उे मउ ल्यम्रिकुउ:॥म

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुरेउर॥ कुलाकीउ विलंघ्यं उभ रूपे विउ लाबु मयं॥ दुखु मा पुनर पउं उ रुवि॥
मकु ॥ कुन्तमारिय॥ उरपउ दिलिय भंटं। चाउ यहकुमा कुं विकमउ कुरुकु। येषु
दिग रुउषु॥ इविठमिउ मिउ उर पुंमउ भइ पसु॥ मदिलिमरुय ए व॥ हं ए उउउ
पकुंउ॥ चन्द्रेय नंउः पउ मुरुयं के॥ यिय मिउं मिलिम्यो उउरं॥ कंगंकुल
हुं पउ मुरु भलुं॥ पउ उ पयं य हरिगी पुरह॥ नाकगे गुउ मिउ पउ लोमे॥ उ जवे कन्य
पिउ भुरउ उ व॥ थाकु उ नर पउः पुव लोयि॥ क्षिपुमेव वमलोउ मिपु लं॥ मयवुउर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मी

सुखमलुंगउं विड'य। भालुंगउं गूडविपुविट्टु॥ नीरुकिउं विकरुयैं विगूडंपूयउं॥
दुक्ख ल्यक्कु किमयिरुठ्ठ तो विनाम्हे॥ दुक्खवा: किनाकुंवंडि नाकेयम्हे:॥ यथा दुयैंगा
रुभूपाल उमउं यउ विवं॥ मिव यउ मचयिनाधिव भमं॥ उव'विड'य' ठ्ठ ना निवियव':॥ ठ्ठ तो
पुयमकं डिडियैंगमंकुवं॥ मडीकृउं यैंगकाकू तोरयैंहिरुमुं मचुरा लि भुरुयउ॥
मउमकम्ट: मकुनपुव'वडे॥ एमन्मेयन्मह्नुमकुउ:॥ दुवे कू लि कैकरलि रुवभव॥
यैंगेवि ताकोडिमगैंकृपा लं॥ था येउ य'ह' ठ्ठ तार ह्यैंगो॥ यउमुडु ना उपियकु॥ मा

मी

रुभूपाल

५३

मी

५४

५३

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मु उग्रड:॥ पूर्व ल्ल रूपउ दम्ट॥ ड्रम्ड उग्र भेदिनी॥ माधव कृ ल्ल गूड भट्टिवेरं॥ विधुमुडुपुये
वक्री॥ उच्च जैपिवितामग:॥ कर्वेडि वडुत नं मं॥ डुद्ध वैपिटिव मिउ:॥ वेरु उकें कुं ड्रि डिर्प न
वेगेम्ड्रीकृ उवं डि डि विपुना विरे डुं॥ उवं पूर्वेपा ग्रिरपेडि मं डि॥ विद्धु विल्ल: वा मूर
ताधुवंड:॥ पूर्व डिवेवितामग॥ गुरु मडिमिडु विर्वे मि उविगेमा मं भ्रु नं रिवन्द डिं
दर्ष भवन॥ माधवेगं रिमड॥ एकं नंपे ड्रम्ड लिद्धु रु डी नं वेग: ऐडु: केरु ठ्रम्ड्रि
उ न॥ ड्रुं ड्रं भेवं न डिवेग डिठ नं॥ उनंवचे वेवेग डिवेग:॥ ॥ माधमडु नं डि॥ मडु उग्र
मिउ मर्वेडि मडि मे वरुपविमुडि मिउ पुडि पुद॥ विपु विषयं पूडिवेविडि गीषु॥ पूरडि उमडुरि

मी

मी

ड्रम्ड्रा स्त

पुरु

ड्रम

पुरु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उः मैथिमपंचरं ॥ उद्दे ॥ व इ धरउः पूरिपु ॥ एक इ पुथिउ मट्टे रुगुद इ भट्टिगे उ
मन्नवरः । पंचइ मपुव इ दुवेउद्दे ॥ मंयेपहः ॥ मापुकुमेउ बुडिउ मित्रं ॥ उंग विट
पुकुमउ वहुनं ॥ व इ मपुः पिलवं म्कि उ ॥ उ ताम्टमिहु मिवउं पूरिपु ॥
मोमं ट मिरी वहु ॥ गज्जिउ पु । उक ताड्डे पु पूमवे नवेइः ॥ मुमपुव इ पूमभुउ
पु ॥ रिहु उवि उ म्कि उ दे पु वेवन ॥ कुंकिक उवन गोणिकन ताथिंगुला थिक पूमपु
पेउ क ॥ उकमी पूमवमंछिउः मिव ॥ वमउः पिलथिव मिउं मुउः ॥ दन्नेउ मम्कि
कुवुउ ॥ मुर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

५५

श्री

भगवान्

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उच्चवक्षस्थले ॥ विप्र सुरङ्गि विकृ॥ प्र पुनंत्व पुन्न नरद्धि तुरंग ॥ उड्डेयी० गलि क कुमार
ङ्क ॥ मा कुउ ङ्क ना नव मरुङ्क ॥ हं पुर० निरुत्तं विमुत्त कोउरी मदंगमदुमंर्स्वरतामोव
वा ॥ वेश पुनिद्र पुर मंगतामी उपेर्व ॥ श्रश्चिउ० युवति: मुवति: मवङ्क । ठं उं
वक्षमुरद कैलिगाव: प्रमङ्ग: ॥ हृ ङ्ग उव ङ्ग लिव्वङ्ग गंश कङ्ग मयंके: ॥ नाव ॥ गुरु
वमा मिद्र ॥ ल्ली वडे नो यठीलि: ॥ विप्र विङ्ग मिउ० ट । हं मिउ वृ उ उ के: यडिउ ल्पटिनाम
ङ्गे अउ वडे नमिङ्गि: ॥ विमनु केमक० य० ये मेरु मङ्गु ङ्गिउ: ॥ कुङ्गं ठवंस० ॥ ङ्गे के:

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री

उडूपा ता

पद्ध

दृष्टै मि द्विमुखवउ॥ कुंडव कन्ता ऊंटउ॥ छू नाना कुंवंवेषिउं॥ विवु नाभनवंद्रुं॥
मूषनमंवर दमुष॥ इमकुम ऊंकेषिउं मडिषये मूषनुंकवेउ॥ एव ॥ मायेइ॥
मडिमाउंउ विक्किउये॥ उकू उंगनोंद्रुवे॥ कन्ता ॥ कुरवेमु उकमोंये॥ मावामाकुंउ
मचंइं॥ कुचीउलि ॥ विषुषुरवः॥ मगा विउंगा मुगउः षुटक्षि ॥ मडीकुरं कैंद्रि
उकंद मिवुये॥ मगा वृलं उः मंषवमे ॥ मंत्रषं॥ इषा व तोंके मकुंषुव ॥ वउ॥
मटेविवु मकुंषुउ॥ षु ॥ रूपः पंचरषडुवं वंन॥ माषुं द्विउंवेमिगु ॥

श्री

उंम

पद्ध

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

.CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दुःखमुक्तिः॥ देवेहे क्रियु॥ धनचलीयन्त्रं यः भायडि तान्मुभयवमा॥ किंदुः॥
त्रिभिषुन॥ भ्रमटं मकेभ॥ भ्रूंडे मी संभ्रमिकंदयिउ यवडुः॥ मेयेभ्रमदयिउ
यठके ष्टिकुभ्रं॥ मुथाणिकं त्रिभुवनमुवरंडिकेष्टिउ॥ मार्थेयमुनुं॥
दगायन्त्रं मः मेमुहूं पुडेव॥ मुवडियाटिमद्वमुंडुरं मी वम्भाय
त्रि॥ यन्त्रमभयेडिहमे वमर्मुरवं मः॥ मपडिनडिउहूं भट्टुकंरीयवं
मम्भुहूं विडयं कन्डिः॥ उल्लंघनीयः कुलाटमठ्ठः॥ भुलांडिउ विभ्रम

मी
रुद्रमाला
हः

मी
रुद्रम
हः

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री
गुरु
नानक
देव

श्री
गुरु
नानक
देव

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर्ण एवहुअस्त्रे रे ॥ इ वृन्तलाबि रिड के करवे प्रयवु उ ॥ चुर: सुडिमिर्यि रुडे उ कर्यं रि
रुयि ॥ नमुयि र स्म वि तोरुनडे कर्ट्रिउ ॥ सुगरे वेद्यु व पु यमेइ स्वम्ब ॥ इ पु स्थिरैव
स्थिरी ॥ उ गंद्यु उ रे रे रुन्ड रि कुलाकण्डुकु रिव रिन्कु टं ॥ युद्ध रि कर्ण्यु विष्णु डिवन
म इंद्र उ यं उ ठिं ॥ इ कु मुं प कुला दृर्ष कुलाकुला इ कु रि मेयं लि उ ॥ मोयेयं पुर्ये
रुन्ड ॥ म गम्भ विरुय: कुलवेषु ॥ ट उ मिद्धु प कुलो पुरुय उ: ॥ युद्ध उं: कुलकुलो पुरुमांठि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री

गुरु:

गाथा:

उपु

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वैकुंठ वैकुंठ प्रभु राम रा॥ रेवती रमण मिरे मिनी सुयि कुं इंद्र अभिषेक कीयो॥ मैं मन्मि
ष्य रूप मूर्ति॥ उत्सव बहु भूत प्रकट कीयो॥ मेरे राम युगुं मिन रेमन्त लोक
लोक नेकारि मुख पूर्ण कि॥ ॥ माघ मही लंकेश्वर वध कर राम गमे रुक्मिणी॥ यदि
कुंभ कुंभ मसंकरमु॥ पंच रत्न कुंभ नवरूमे॥ ५ चरमपट पर गयं कि किं
उमे हे कियके: मृत कि॥ ५ चरण गयुं कि पडि पडि वैगो विउ मयरत गयो यो॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रगडीश्वरे॥ कथितं तत्र मीयुर्मंकुमाल उत्थाऽतिपरं वृद्धि उपरमद्धिभिः॥ यावद्भिर्मेव
यनवृद्धिमृत्तः॥ उद्गुरुकं तोनदिवं करस्ट॥ कृतिमुवेद्धिमुपरं हिकानं॥ वक्रमेव
मृतिभिः पूरिधुं॥ गाथिमाभाभाऽ॥ मविरमंतु तामेद्धियद्समी॥ उरचमंकुमालं कुव
उरवि॥ भाषमडेमुवनमकरकुट॥ मृतिवरैः कथितुकृतिभाकः॥ यंदमेमडिभव
स्मिमालिनं॥ मंकुमेवुवतिउिग्मरेचिथः॥ उपमंपतामधुवरः मा पमा पुथिवमेव

एकस्मिन्वर्षमध्ये तौ द्वौ मासौ भानुलंघितौ॥ पूर्वो मासः प्रशस्तस्यादपरश्चाधिमासकः॥१॥ वर्षार्धमध्ये स्वरसूर्य
मासौ मासद्वयं यद्यधिकं करोति मध्ये तयोर्यो भवेमेव पुण्यमाकुर्द्वितीयं मलिनं द्विजेन्द्रः॥२॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री
रघुनाथ
प

इयेंटमी इडीवर्ये॥ म्ह उक्तु विडुर्ये यवे:॥ मार्वेपुरा ॥ कु॥ वद्रिचिविं ॥ जिम्कगा ॥ म:
ऊ॥ विमा पैरिनहु डम:॥ इ ज्ञं उकै विषु डम्मि रमु। मच: मभी उडिपुरा ॥ ॥ ॥:॥
मावडिवीं मभा रि॥ वृवि: म्ह मंगा त पुरा उ वता पता उ॥ ताक्ष्वी वडी इवयम यव उ
मुमि इ॥ उ ह ह ता म्मड डी डिविवग्र कद्र म्ट कुम्र ॥ पुडि यट रि उबै नर॥ रुमपु
मैवहैं ॥ यैग्र॥ मैं म्ट कुवा यंग्र म्मी डिवि: म्ट उर॥ ऊ ता रि. उ म्ह. म ह म रि. उ मं॥

श्री
रंम
प

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पुं प्रहस्तं गन्तुं विवेद्य इ॥ अथ पुष्पकं मंत्रि कक्षकं दं। मदेवरत्ने थिइ कक्षगतुं
नाचं द्विरप्रकुलंगतानि॥ मामयक्षरबुभ॥ उभिलुयुग्मं पत्नु यक्षरबुं॥ ब्रवेद्वि
ज्ञीयं दमभीरुडिहुं॥ दमसु उभं विषमं वरिंभ्रं मृउभमिद्वैरवभी विडंव॥ माम
रूरमरुवेमरुडिविरेवमाउ॥ मुहुंमुउम्रः क्रिय प्रचिकांछ॥ एवं मुहुंमयिपंच
मीमंउर॥ यत्रः परेयं परउमुवैव॥ मक्रमरमैव मुव उभिः मरुउर॥ एकं उव दिनकरे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री

[illegible]

श्री

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वंशमंडलमपरीक्षितेषु पिंडेन मिथुनमपि लेषु ॥ ३

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऽनक्षत्रलिखितमुलमेऽइमगवेडिलीकवे:॥ धे भूमावऽमधेऽउवाछिडे: निचठंछि नवुछिमीद
मं॥ धालिखिवुनविधिचिठीयऽडे॥ ॥मावगृहनं॥ पूरुपऽडे धे भूवेमाछिडे वे॥ पुधेल्ले
भूमेऽरुपे हाडुकंभ॥ मागृहनंछुऽमलंऽइयेऽ॥ मेषुं धेऽकुंभ कुनै गजमोदे:॥ मावावि
हंऽनक्षत्रलिखितमगदियंऽमधिऽवुमुला॥ ऽमुंदिकेऽ इडीवाम्बिरीभ॥ पुचा
ऽइयेऽमवलंऽऽऽछिहंमभांऽमंऽमिछे॥ मावऽवेऽपुंकव॥ धे पुंछुयेऽंछि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कग्मिनरिइ। पुष्टवमवपुनवम्मैइ:॥मेरुवे: मुवा वेठविठं निरि मंडिमनयें
डिमिमुनमा॥ माव ब्रभू मनं॥ रेवडी मुडिपुन चम्म उमु॥ इम्मउ: पूँवगायिस्ठिडीये
०॥ इडुडेयिकवि उंपुष्पुकं न॥ पूं मनं डिमनवं इविव नमा॥ माव मुं मंडं॥ पुवे
यें पूंनमिनी वेरुवेरु॥ मेरु उमु दिडिकेनेपुदिडुं॥ वैं रकं दं वैपूवं इइवेरु
मकुंमें मादिडुपं डंगिवं नरु॥ नमं उमु कुंकुटमुपउ नं॥ मनुंगयइमनमैमापं नं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आदित्यबुधपुष्येषु नवमासो विधारणं नेकुंतिमुनयस्त्रीणां तथा भर्तुर्मित्रदं

रेधिरपुनर्वसुद्वये ॥ रेवतीषु वसुदैवतेमुखे ॥ नवकस्यपि नभियते ॥ कर्तरियं रुकेमु
ते ॥ मधेषु वभवः सुतः ॥ पतिमुमंपकंष्टं ॥ पूर्वं तरकुवं भमाभ ॥ पकपूतेतुतिष्टपुत
भ्र ॥ पुनर्वसु मुद्दिडीये विरचयंतर ॥ पूर्वं तरकुं वरडेभमंत्र ॥ उत्तुदरी केतुव
ता युति पूभ ॥ मायपुंभवरं ॥ सुवर्णः भकरः पुनर्वसुद्वितेतुंभपुष्पकेभगः ॥ भवि
कुंभतुलीवरामगः ॥ कपिलः पुंभवरं दिभकुंभे ॥ मायकलवेरः ॥ ये पूर्वेतुव
काकीववंध्याभवतीतिमुकेह्यल्पप्रजा पुंसवनेषु धेत्र ॥ शैरराम्मतः पयसोल्पतेन्ने
भामार्कि जीवेर्वकुपुत्रलाभः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री
रघुनाथ
१६

स्त्यि ० ल्लू ० ह्यूयद्यूदिं॥ दंयंहेवूपश्रहृयेवयिमद वहूंमुवस्टाजिंबिः॥ प्रुता रेयमधाहिं
रेवबुरलामर्च द्यूलिपुचा हृयंहूंउचिंबिरठेमपंडिनव कंबुरमिटंकी ठिउं॥
वंधीरूपउबुं कमरुपरिपंउंरिरमेंबूउं॥ श्रेयं द्युउ विनापूवमेंगरलाउंरुः
प्रमिबूंउिरु॥ हेबुंदिहकरमिंरीमगमिरः पंबूंरम ठमिनाहूंबूंएंरिवरं
उिबुंरिमनयमिदश्रपंहेबुउ॥ मम्हेउंबूलतापरमभतवृषेरद्रदिरंउिबुर्ने॥

श्री
रघुनाथ
१६

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मरु गरुड़ वमिरे ॐ इमिरुडिउँयंव विम्मे विति ॥ गैविरैवमवैंबुयं सरव लाडिबुपुयं विम ॥
माबा मिरुटी ॐ उ ॥ मम्बेबुला हुयं व्वृव बुडैमंबैवैं वैमवक: वाबुं गैं: ममम
बुउँयिमडिवरा ध्यू: यन: भैवु: वृ ध्यै लिमगम बु तौ कयिवमैंवर हुयंबंवर: ॥ भि
डमैंस्टगम व्व मुमुकवटी यैरिमुकु मंमियं ॥ मवैंध्यैंदरं ॥ गैवृ ध्यू गसामिं उम
मुमडिबंम्बे लं व्वबुरां ॥ वैरं बंवर मेवयै मुम्मम डुडुहिबु तौ मुरं तैं कांरं वृवडंवडुं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री
गुरु ग्रन्थ
१५

विष्णुः गुरुः गोरक्षनाथ कर्त्तमेव प्रमेश्वरः ॥ रे इष्ट मन्त्रे : अरे : बुद्धकाल ॥ ॐ विष्णु
कुंभरः ॥ मन्त्रं यथा रि मन्त्रमेव मर्थं ब्रुवन्ति गोविन्दः ॥ यिह कर्म कुर्वन्ति ॥ मैं तंत्र
सर्वाल ॥ उपरान्त कुरु सर्वकर्म गोविन्दुपूर्व मिमुर्थं ब्रुवन्ति मंगलाचरि ॥ ॐ ब्रह्मा
कालः ॥ मायन्त्र रूपकालः ॥ मा गुरु गाउरं नन्त्र रूपं देव ॥ मा कुलानंद ॥ ॐ
सर्वमन्त्र गिरि मामित्रः मर्चेदिव्य कुरु ॥ कर्मस्थः यिउगेन्द्रा यम गविन्दु पूर्व कृयमा
२३ ॥

श्री
गुरु ग्रन्थ
१५

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व: नोवेद्धिल्लडिउ रुयिकद्म॥ कैं नोवेप्रभटमिउविठं॥ ॐ डिलेमुखमडमरयकद्म॥ कैवेरुवीरुमरयकद्म
ल्लडि॥ वल्लिल्लयिकुंदवल्लिक्रियमु॥ रसिविभायडिरु ॐचविष्टं॥ विथ्यिथ्यिउडिरिवुउड
मिविं॥ मवृक्षुयंस्वरवंगतकमुवैकं॥ वक्रैरमैकमडिउडिय ॐउंउंवरः॥ नवीकटिःय
वुयप्रक्कगउमुउर्रे॥ विवु चुठैवडिउ ॐ कु विवुगएयः॥ भविकदपाम्डुवडिमरलंरुयग
नाके॥ वमिहुडिचक्रमयकटिउटवुविनायः कतोद्भीरमेविरुयमयप्रक्कन्नगाड्
मरीवडुयः यसागडिकतंपु वमरुयः॥ रुतामिविमभिवक्रः भचकीरुमवयुः॥ इम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कलंडरं मुपथानं विवडकं विवहयेउ ॥ वेयकं पंडमेकमुं मुलीवं नमंमय: =१

उद्दिठीवडो ॥ मु दहिउ: ॥ मिवमिव गुड विधुकेडु ॥ कंतामूमे ... पउय: कविउ गय

डंगं ॥ वकुंवु जुनि उवि मरुमरी विहिंच ॥ मुवं पुनमुनि वरै: पुडिर्वेवउ मु ॥

उंडि मी पडिविरुचिउ वं पुंडिय मुमा तं यं वंगपकुं मला मुमा ॥ ३ ॥

मावयेंगपकरगं ॥ रुमंमेवंडियेंग ॥ विकंव: पीडिव पुथ्वन ॥ मो कंग्य:

मेंडनाव ॥ वडिग मुं वंगकंमु ॥ ६ पुडि: सुतागमु दुमु ॥ पवनमंमेंवंइव

श्री
मुमाला
१२

श्री
नम
१२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मचेक्षुपिभंगतोषु॥ ॐ मे मुः ग्रदवृत्तक्लिन्नु॥ मगेल्लवर्ग्रुविवल्लयंडि॥ माषकुलि
क॥ मद्वक्लिवृत्तवेटयवैक्लुंकुलिकंडवंडि॥ दिवकिरे कैव्यवयमिरी
षु॥ उगडिउः कमुमेमंडनेषु॥ माषवग्रुवृत्तिः॥ वग्रुउ ग्रुटिकंडिकिप्रुः॥
कंतापडैगयउयः मग्रुः॥ चिंठिपदंगविमुरुणेः। ममंकमेंग्रुकुरुः
ईरुमे॥ वग्गरडग्रवमे॥ वमुकिंस्रिदु कीडिउं॥ उमुरकंतडैगयांगचमे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मधुमाकुमुं भ्रूत्वः॥ ॐ मम्मुं भूं विज्ञा ॥ उडव॥ वैरुत्वः पंचमाम॥ मधुचेचुरुम
मव गुरुः। मुरु ए कंटमेडि॥ भ्रूं ज्ञः गन्तप्रवृत्तिमयः। ॐ व कदेषु उत्तं॥ मावधि
विष्टं वंतजं॥ विष्टं रुतेमव गुरु मिउहे कुडिमुं ज्ञ्चवी॥ कमुमुं वृत्तिमायिकर्ने
हे मुमाम पर्मेइ॥ मीउमं मेउवडिएवुउं॥ पंचउं जुमिपुइ॥ कवंमुमंवायिव
उवं॥ कामुवंइवमाहः॥ मावंवपडमं॥ मनीविलिवपडमाद्विउीयंटमंवृ
भमयः

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री
गुरु भाला
१

इलंडे ता बृंगाङ्ग थटि कुव डे अद उवय:॥ न ङ्ग व व ग ने न स्वांङ्ग मेयि॥ न वै प उ ने न वृ डि य उ यैंग॥
न य ङ्ग मचे न न विङ्गि वर्ङ्गू॥ न बृंग ऊ ङ्गू ने न न न य च ङ्गु:॥ मा ख व ग ङ्गे य ङ्ग ङ्गि॥ व ग
य ङ्गु ङ्गि म न यैं क ङ्गि॥ मु दैं ङ्ग व ङ्गू व ग ङ्गे ग ङ्गे ङ्गं॥ डु ङ्गं उ व ङ्गै य य ङ्गु उ म्म ङ्गु म
व ङ्गे म उ ग न ङ्गि क ङ्गि:॥ व ग ङ्गे ग ङ्गर्ङ्गे य ङ्गु य व ङ्गु क ङ्गं व ङ्गौ ङ्गि ङ्गु म्यौ ङ्गु मि ङ्गि॥
उ वे ङ्गु ङ्गे व य ङ्गु य ङ्गु म। य व ङ्गु ङ्गे ङ्गि ङ्गि ङ्गु म य ङ्गु म व ङ्गं॥ मैं म मैं म गु र मु ङ्गु व म म:

श्री
गम
१

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री

अ॰ ना॰

१

कांदंदिकुलेद्रिकुदउ॥ ॐ॥ मावबुव्वरहं॥ ऐपुरुषपुरुषयंकतामु। मिनदिमेवनि
धिनोपमरि। ठंकुरिय कंरुन्यकुमंठि। दृयंमवंटमुवुठिठेयः॥ वृ॥ मावमुवव
रहं॥ वमरिय धंखिकवपुविरं॥ मंगतडेंवरवेमवंइरवामुंयपुविकुव
ल्लदि॥ कंदंविरपंमुरमंद्रिल्लद्रि॥ दृ॥ मायमुरव रहं॥ श्री गीउमयंमालिवमगनू
वसुंमुवतंकरल्लदिकमु॥ कुयपुगेकेमत्रियमु॥ मिनूंउ मुरुन्टसिनेमभर्ः॥ मु॥

श्री

रंम

१

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उदमभीरुनमुभीमाभे॥ वज्रतामुभीनवुन्दे॥ यथा रुं कंबुकेरुउहु उ॥ ह्रंत्युमाभिउयंरुवमी
रुंइ लेभुरुयंलमाभीरु॥ भहुउ गरुयभे॥ रुउ उ मेंकु वुरुः पुरुः॥ सावमालक्कंयं॥
रुभुयउ इयेरुमं॥ भयाभिन्नुकरुभवि:॥ यरुउरुगरुक्कंयं॥ मंउ पुरुं रुवंय
उ॥ यइकन्दमंडिउविरुवंवमंवंगमेंउरुवमरिनंउउकुमदे:॥ यः भद्रमंडुवडि
उविरुयमरुंइ हिन्दुकपुरमिंहुवंरुनेंबु॥ ॐ डिमीयाडिविरिउयं लेंडियवडु
सावयंयभसुयमेडिमुदमिधिंयहुउयवाडिनीरु॥ भद्रउहुउपुयिलोयपुहेंयरुडिउंकानविरः पुरुः॥ ॥

मी

मी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उकुमि नीव नाथ नभुरहु ॥ चंद्रेमहु उरा मिउ अंतरु मैं ॥ नाव युगा चैरा उ ॥ भा थे अंत
रमीरहु ॥ नकुमेरु इ चैरमी ॥ इ डाय मैं रवे मुहु ॥ नकमु ले युगा प्रय ॥ उ इक
निहु यर एवमा थे । इ उ इ डीय नवमी रु उ ॥ ए उ मु उर मिउ थे युगा हु ॥ दु उ
क्रयमा मविहु उ ॥ नावमरु उ नाथि ॥ मुहु युल मुलु नवमी ॥ रु ट मकु ले मैं
इ डीय रु ॥ उ इ यटोयि इ डाय ॥ रु नाथु मा मे उ मा वा मा ए कंटमीयैं वे मुरिमि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्री सर्व्वज्ञदेवाय नमः ॥ श्रीमद्भट्टारक श्रीहरिश्चन्द्रभट्टारकाणां ॥ अमेव
भगवद्भिरुक्तमेतत् ॥ देवहूकपुरुषस्य मेव विस्तरेण उपरूपा ॥ ०॥
भाषे रं भूविचिंतके: कृपालु रे रंग भव वाक्तिके: भारिहं भविवेकुदेव
वविके: धरंके: भिगते: प्रतु: कृष्ण विवेकके दंदभतो: हुनंतमेंत वृते:
रंचके कुरुन सर्वमरभवंतहुम रथ तुव: ॥ मुमभ्रमा देम विदवू भविवा
विठि: ॥ भडं विदूलिंटेथं रूपा ता भनतुरं ॥ पुतवावरिंतिभए ॥ हुनवंपंभि

ॐ श्री गुरुभ्यो ता १

ॐ श्री गुरुभ्यो ता १

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वीदेवकूटमावयति॥ यमुंडिकुंडं वमे डेडउरमहूकुंकवुनद्यंति॥२॥
उंडिमीमीयडिविगडिउं यं ह्रीउयवकूमाता यं देवकूडिपु पुकरालं विंमउमं॥२॥
मामा पुंचकूमाते यंमुंडवकुमाचेयं॥ ईरैइ नमेरुपुस्वे उवमं कुठवमरेति
धिउमामुंचं। यद्रिमंपुंकंदपु उंहुडिमं तिधिउंमया यस्मिमुंठमसुं
वंनमिटेवेरटीयउं॥ मंपडुंमंवउ उ४ श्रीविक्रमादित्यसंवत् १८०५
तिथि उं पा तउंरातिविश्रम्ट॥ रैइ२इदिनवुमं उ उमीतलग्नकुलाकुइसुकमसु॥

श्री
रकूमाता
६७

श्री
उम
६७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri